

## धरती पर सम्पूर्णता की जनक बन उभरी-दादी

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है। पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक देशों को अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है। अपने मन मस्तिष्क को आध्यात्मिक प्रयोगशाला बना, उसका प्रयोग इस जगत के मानवों को जीवन की सही राह दिखाने वाली एक दूरदर्शी, लाइट हाउस दादी जानकी को उनके इस धरा पर इस अमूल्य देह के सौ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में कोटि-कोटि बधाइयाँ।

दादी जानकी एक सम्पूर्ण अभ्यासी महिला हैं जिनका जीवन उनके कर्म से बोलता है, जिन्होंने 20वीं शताब्दी में एक महान परिवर्तन की नींव रखी। आप शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य की एक मिसाल हैं। आपका हर कार्य प्रायः समझ पर आधारित होता है। यदि हम इसे कहें कि आपकी सोच एक सुरक्षित स्वास्थ्यकारी मानवता का भविष्य निर्धारित करती है तो कोई अति-शयोक्ति नहीं होगी। आप 1916 में एक सिंधी, धनाढ्य व जनकल्याणकारी परिवार जो वर्तमान समय पाकिस्तान (सिंध) का हिस्सा है में पैदा हुई, जो आज हज़ारों हज़ार के विवेक को जागृत करने की प्रेरणाश्रोत बनीं। आपको देखकर आज सभी अपना जीवन खुशी से भरपूर और स्वास्थ्यकर बनाने की प्रेरणा लेते हैं। आपके बारे में एक बात और हम कहना चाहेंगे कि आप ही हैं जिन्होंने वैश्विक स्तर पर भावना और उससे उभरने वाली बीमारियों की गहराई में जाकर सबको अवगत कराया। आज बीमारी सिर्फ शारीरिक ही नहीं है, बल्कि उसका एक स्तर मानसिक भी है। इनका दृष्टिकोण ना सिर्फ स्वास्थ्य को गति देना है बल्कि नैतिक स्तर पर पूरे विश्व की आत्माओं को हीलिंग देना है।

### सेवा की विहंगम दृष्टि

दादी की जीवनी की झलक अगर हम देखें तो उन दिनों दादी को जो पहली सेवा मिली जो बीमारों की सेवा थी, जो उनके जीवन को तीव्रता प्रदान करने वाला क्षण था। उनकी प्राथमिक शिक्षाओं में प्रमुख रूप से भारतीय ग्रन्थ थे जिसको उन्होंने बड़े दिल से समझा और आत्मसात किया। 12 साल की उम्र से आपने इस श्रृंखला को पूरी तरह से विकसित किया कि कैसे अपने आपको आध्यात्मिक चेतना के आधार से जीवित रखना है। आंतरिक खुशी से कैसे शारीरिक दर्द से बाहर आया जाता है, इसे आपसे अच्छी तरह से सीखा जा सकता है। दादी के पास जब भी कोई ऐसा परिवार मिलने आता, उनमें से चाहे कोई उनका रिश्तेदार ही क्यों न हो, उन सभी को उनसे परमात्मा की झलक और बहुत हल्केपन की फीलिंग आती है। प्यार और सहानुभूति की जैसे वे प्रतिमूर्ति हैं।

### दादी ने जो सीखा वो परमात्मा से

दादी जानकी संस्था के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के बारे में कहतीं कि मैंने ब्रह्माबाबा से शक्तिशाली, व्यवहारिक, आध्यात्मिक जागृति का पाठ पढ़ा। उन्होंने सिखाया कि कैसे परमात्मा से जुड़कर दूसरों को भरपूर किया जा सकता है। निःस्वार्थ और दिल से सेवा करना लोगों को शक्तिशाली बनाने के लिए अति आवश्यक है। सम्पूर्ण स्नेह से लोग हमारे विचार, हमारे शब्द और

हमारे कर्म को समझ पाते हैं<sup>1</sup> दादी का कहना है कि उन्होंने ब्रह्माबाबा से दूरांडेशी (फॉर साइटेडनेस) बनकर धर्म, पंथ, समाज से उपर उठकर खुशी और हर तरह के स्वास्थ्य को लोगों को देना सीखा<sup>1</sup>

6 दशक की उपलब्धि

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है<sup>1</sup> पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक देशों को अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है<sup>1</sup> आध्यात्मिक और धार्मिक नेताओं से भरा हुआ, सन 1996 में यूनाइटेड नेशन कॉन्फ्रेंस जो इस्ताम्बुल में हुई थी, जिसमें विश्व भर के प्रख्यात आध्यात्मिक और धार्मिक नेतायें आये थे, उसमें दादी जी ने प्रथम में सम्बोधन भाषण दिया था<sup>1</sup> इसी शृंखला में सेन फ्रान्सिसको में 1996 में स्टेट ऑफ वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस में भी दादी जी ने हिस्सा लिया था, इस कॉन्फ्रेंस में वहां के तत्कालिन राष्ट्रपति तथा लगभग 600 से भी अधिक कार्यकर्ता उपस्थित थे<sup>1</sup>

### एक ऐसी युक्ति जिससे होना कल्याण

कलियुग के अंतिम चरण में, अज्ञान रूपी रात्रि में, जब परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होते हैं तब वे मनुष्यमात्र को यह शिक्षा देते हैं कि - 'काम-वासना का भोग एक जीव-घातक विष लेने के सामन है जिससे कि मनुष्य का जन्म-जन्मान्तर का सर्वनाश होता है<sup>1</sup> अतः ज्ञान रूपी सोम अथवा अमृत निराकार परमात्मा शिव, जिन्हें ही 'सोमनाथ' और 'अमरनाथ' भी कहा जाता, इस संसार सागर से सारा विष हर लेते हैं<sup>1</sup> इसी कारण उन्हें 'विष-हर' भी कहा गया है<sup>1</sup>

परमात्मा शिव के उसी कर्तव्य की स्मृति में आज भी लोग जब शिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं तब ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं<sup>1</sup> वैसे भी जो शैव लोग प्रसिद्ध पाशुपत व्रत रखते हैं तो वे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं<sup>1</sup> जो मनुष्य 12 वर्ष तक निरंतर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे पाशुपत व्रत का बहुत फल मिलता है- ऐसी शैव लोगों की मान्यता है<sup>1</sup> पाशुपत व्रत रखने वाले - ब्र. कु. गंगाधर शैव लोग ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के अतिरिक्त, शिव की याद में रहने का अभ्यास करते हैं तथा जो वस्तुएँ उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं उन्हें शिव को अर्पित करते हैं और शिव की सेवा में रहने का पुरुषार्थ करते हैं- उपरोक्त बातें मुख्य रूप से उनके व्रत में शामिल हैं<sup>1</sup>

वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है अब विष को छोड़कर शिव से प्रीति जोड़ो!

उपर हमने 'रात्रि' का जो अर्थ बताया है, उससे स्पष्ट है कि अब कलियुग का जो अन्तिम चरण चल रहा है, यह सारा काल 'रात्रि' अथवा 'महारात्रि' ही है<sup>1</sup> हम सभी नर-नारियों को यह शुभ-संदेश देना चाहते हैं कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ज्ञानामृत पिला रहे हैं और वास्तविक सहज राजयोग भी सिखा रहे हैं<sup>1</sup> चूंकि कलियुगी सृष्टि के विनाश में बाकी थोड़ा समय है, इसलिए अब हम सबका कर्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान-सेवा करें<sup>1</sup> वास्तव में यही सच्चा पाशुपत व्रत है जिसका

फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति माना गया है<sup>1</sup> अब मनुष्य को चाहिये कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमपिता परमात्मा शिव से वह अपना नाता जोड़े<sup>1</sup> वास्तव में शिवरात्रि केवल एक दिन नहीं होती बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान-रात्रि में अपना कर्तव्य कर रहे हैं, यह सारा समय ही शिवरात्रि है जिसमें कि मनुष्यात्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए, शिव परमात्मा की स्मृति में स्थित होना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य व्रत का सहर्ष पालन करना चाहिए<sup>1</sup> शिवरात्रि का त्योहार मनाने की यही सच्ची रीति है<sup>1</sup>

शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है

चूंकि शिव ही ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनंद के सागर, प्रेम के सागर, परमपिता परमात्मा हैं, जोकि कलियुग के अंत में पशु-तुल्य आत्माओं को माया के पाशों से छुड़ाकर मुक्त करते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा मनुष्य को देवता बनाते तथा सतयुगी पावन सृष्टि की पुनः स्थापना करते हैं, इसलिए 'शिव जयन्ती' ही सर्वोत्तम त्योहार है<sup>1</sup> यह सभी आत्माओं के परमपिता का जन्मोत्सव है जिसे सभी देशों में धूमधाम से मनाया जाना चाहिये<sup>1</sup> चूंकि शिव ही कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम समय सभी मनुष्यों का जीवन कौड़ी-तुल्य से बदल कर हीरे-तुल्य बनाते हैं, इसलिए शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है, परन्तु आज स्वयं भारतवासी भी शिवरात्रि के इस महात्म्य को नहीं जानते तो और देशों के लोग भला कैसे जानेंगे...!

### हमारी नवीनता से लोगों को मिलेगी नूतनता

विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है, सबसे बड़ा फायदा कि कोई और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं<sup>1</sup> सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं<sup>1</sup> उपर-उपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वह भी सच्ची होती हैं<sup>1</sup> पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती<sup>1</sup> शंख जो होता है वह सागर की रचना है इसलिए उसका आवाज कितना दूर-दूर तक गूंजता है<sup>1</sup> विचार सागर मंथन से लगेगा यह सागर की रचना है<sup>1</sup> कोई और बात का विचार न अपने लिये आता है, न किसी और के लिए आता है<sup>1</sup> शान्त रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन मिल जाते हैं<sup>1</sup> सोचने में नहीं मिलता है इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ<sup>1</sup> मेरी दिल होती है आप भी ऐसे बार-बार मीटिंग नहीं करो, क्या जरूरत है! फ्री रहो<sup>1</sup> हाँ, फ़ैमिली फीटिंग की मीटिंग जरूरी है क्योंकि परिवार है<sup>1</sup>

विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो<sup>1</sup> मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को प्रेरणा मिलेगी<sup>1</sup> यह गुप्त बात है, अगर हम अभी करेंगे ना, भले पहले इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, बाबा रहमदिल है, फ़ाकदिल है उसका फायदा तो<sup>1</sup> विचार सागर मंथन जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है<sup>1</sup> इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी<sup>1</sup> अगर ज़रा भी मैं दुःख महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं दूसरे का दुःख दूर नहीं कर सकती हूँ<sup>1</sup> लाइट रहने से औरों को लाइट अनुभव होगी, हटकापन लगेगा<sup>1</sup> 5 हो या 50 हो या 500 हो, पर बाबा की लाइट लाखों करोड़ों को मिल रही है<sup>1</sup>

कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है इसलिए क्यों न कहो<sup>1</sup> आयी है

पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है। कई हैं जो डॉक्टर और दवाइयाँ बदलते रहते हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं होता है, पर कोई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है।

बाबा कहता है कोई बोझ हो, कोई संकल्प हो तो तुम सिर्फ मुझे दे दो, ताकि तुम साफ रहो। साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। माया छुयेगी भी नहीं, पर कर्मभोग, थोड़ा ब्लड प्रेशर हाई हुआ, ... परेशान हो जायेंगे। अरे, परेशान क्यों होते हो? प्रेशर परेशान होने से होता है। शान में रहने से नहीं होता है, यह नवीनता लाओ ना, क्या बड़ी बात है। तो ऐसे एक दो से सीखने की भावना हो, तो कभी भी हमको तकलीफ नहीं होगी। न मेरे से किसी को तकलीफ हो, न मेरे को तकलीफ हो। किसी को शान्ति पैरम भले मिले, जितना मिले पर थाले भी कोई मेरा एक शब्द या मेरा रहन-सहन किसी को तकलीफ न दे। यह पुण्य के खाते में जमा होगा। कर्मों का हिसाब-किताब चुत्तू हो जायेगा।

तो बाबा यह विधि सिखाता है, महिमा करके योग्य बनाना। बाबा के काम का योग्य बनाना, मैं इस काम के लिए हूँ क्या? अरे, क्या भाषा बोली? सम्भल के बोलो क्योंकि स-ंगमयुग पर एक-एक बोल अमूल्य है। ऐसे बाबा का एक-एक बोल अनमोल है, ऐसे हमारी भी बहुत वैल्यू है। जो पुरुषार्थ करना है, अब करना है, मुझे करना है, समय करा रहा है, बाबा करा रहा है। कोई बड़ी बात नहीं है। गुप्त पास विध ऑनर में आना है। क्या समझा है? कोई समझे ना समझे ल-ेकिन बाबा तो समझता है ना। अगर हम ख-जानों को सम्भाल के नहीं रखते हैं तो उसे प्राप्ति की कदर नहीं होती है। जहाँ किचड़ा होता है वहाँ कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही थोड़ा भी हमारे अंदर किचड़ा होगा तो औरों को बीमारी पैदा करेगा इसलिए स्थूल, सूक्ष्म अंदर बाहर से सफाई रखो क्योंकि मैं कोई डस्टबीन नहीं हूँ। कोई भी किचड़ा है मन या तन का, तो वो इधर-उधर नहीं फेंको क्योंकि यह भी ईश्वरीय कायदे हैं ना। ईश्वरीय कायदे प्रमाण चलो तो सब ठीक है। आजकल दुनिया में लव का दिवाला है, न लव देना जानते हैं न लव लेना जानते हैं वह कायदेसिर क्या चलेंगे? लवफुल ही लॉफुल होते हैं। मैं शरीर छोड़ूँ तो क्या याद करेंगे, थी तो अच्छी परंतु... यह नहीं चाहिए, वो यादगार नहीं है। तो दातापन के संस्कार इमर्ज करके ब्राह्मणों को स्नेह और सम्मान से प्यार दो और अपने से आने रखो।

### बाबा का संकल्प, हमारा हो कायाकल्प

अभी सभी बाबा की याद में बाबा की बातें सुनने के लिए इकठे हुए हैं। अभी सबके सूरत में बापदादा की याद दिखाई दे रही है और हरेक को कितनी खुशी है क्योंकि बाबा कहता है कि खुशी जैसी खुराक और है ही नहीं। अगर खुराक खाना है तो खुशी, तो आप सब तो सदा खुश रहते ही हैं। तो आप खुराक खाते ही हैं, आज देखो बाबा की मुरली का ही वर्णन कर रहे हैं। बाबा ने कितनी अच्छी समझानी दी है, बाबा कहते हैं कि आप बच्चे जब यहाँ हॉल में बैठते हो तो उस समय आपकी बुद्धि में क्या आता है? अभी बाबा आया कि आया, बाबा के महावाक्य सुनने के लिए आये हैं। तो सबकी बुद्धि में बाबा के शब्द स्मृति में आते ही रहते हैं और इस स्मृति में रहने से कितना सुख और शांति का अनुभव होता है। सिर्फ सोचने से ही कितना अंतर पड़ जाता है तो आप सोचो, सोचने के बजाए जब हम वो

रूप बन जाते हैं तो कितनी खुशी की बात! और सदा यही कोशिश करनी है कि जिस समय भी हम बाबा की बातें सुनाते हैं तो उस समय ऐसे लगे जैसे बाबा हमारे में सम्मुख हा.जर ना.जर होके अपनी याद दिला रहा है<sup>1</sup> और बाबा ऐसा मुस्कराता है जैसे सामने से ही देख रहा है और हमारे भाव्य को उदय कर रहा है<sup>1</sup>

बाबा कहता है बस, चलते-फिरते कुछ भी करते मुझे याद करो<sup>1</sup> और याद कितनी मीठी है बाबा कहने से ही मुख मीठा हो जाता है<sup>1</sup> तो आज भी हम सभी मिलके बाबा की याद में बैठे हैं और बैठ करके जो बाबा का संकल्प है कि इस दुनिया में यह पता पड़े कि हमारा बाबा कौन? और बाबा क्यों आया है, वो हम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं वो भी बाबा रो.ज देखता है<sup>1</sup> तो आप सभी भी आज बाबा के आगे बैठे हैं, यह तो भाव्य है जो जब बाबा चांस देता है अपने सामने बैठके सुनने का और हम लोगों को भी कितना अच्छा लगता है, जब बाबा के सामने बैठते हैं और बाबा बोलते हैं तो ऐसे लगता है जैसे एक-एक शब्द बाबा का मेरे लिये स्पेशल है और मुझे ऐसा बनना है, दूसरे तरफ बुद्धि नहीं जाती है<sup>1</sup> अपने तरफ ही जाती है तो कितना मीठा अनुभव होता है<sup>1</sup> अभी आज भी उसी अनुभव को हम रिपीट कर रहे हैं और दिल में वाह बाबा, वाह बाबा वाह! की समृति कितनी प्यारी है, आपके भी अंदर बाबा आ गया ना<sup>1</sup> आप भी यही समझते हैं कि बाबा हमारे द्वारा बोल रहा है, तो अभी चलो बाबा के महावाक्य सुनें और सब कुमार या अधरकुमार भाई सब उमंग-उत्साह से बाबा का एक-एक बोल सुन रहे हैं लेकिन धारण करके उस पर चलने का दृढ़ संकल्प भी कर रहे हैं<sup>1</sup>

तो आप सभी भी किसकी याद में बैठे हो? मीठे बाबा, प्यारे बाबा की<sup>1</sup> ऐसे मीठे बाबा को याद करने से अंदर का कड़वापन आपेही निकल जायेगा<sup>1</sup> बाबा की हरेक बच्चे प्रति यही शुभ आश है कि यह मेरा एक-एक बच्चा बाप समान बनके निर्विघ्न रहे, रहते भी हैं और रहेंगे भी लेकिन एक-एक बच्चा विश्व कल्याण के कार्य में सदा मग्न है भी और सदा मग्न रहेंगे<sup>1</sup> तो बाबा आप सबकी शक्तें देख करके प्यार कर रहा है, वाह बच्चे वाह! कितना प्यार से सुनते हैं और प्यार से सुनते प्यार को दिल में समाते भी हैं और दिल में समाते से कभी भी देखो तो बाबा का प्यार ही दिखाई देता है, ऐसे है ना<sup>1</sup>

आजकल की मुरली का सार क्या है? बाबा कहते हैं कि बस, कुछ भी करो मुझे याद .जरूर करो क्योंकि पाप कटने के लिए तो बाबा की याद ही चाहिए ना<sup>1</sup> तो हमारे कितने जन्मों के पाप इकट्ठे हैं और फिर अभी बाबा के याद में सब स्वत्म हो रहे हैं<sup>1</sup>

**महाशिवरात्रि 'महापर्व' की महिमा**